Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 5 | MAY 2024

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का विस्तार: समय की आवश्यकता

रविन्द्र जोशी [1]

[1] **पोस्ट गेस्ट फैकल्टी असिस्टेंट प्रोफेसर गवर्नमेंट कॉलेज बागोड़ा, राजस्थान.**

ABSTRACT:

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) वैश्विक शांति और सुरक्षा बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हालांकि, 1945 में अपनी स्थापना के बाद से, वैश्विक परिदृश्य में महत्वपूर्ण परिवर्तन आए हैं, लेकिन सुरक्षा परिषद की संरचना लगभग अपरिवर्तित रही है। इस शोध पत्र का उद्देश्य सुरक्षा परिषद के विस्तार की आवश्यकता पर जोर देना है। यह अंतरराष्ट्रीय शक्ति संरचना, उभरती शक्तियों की भूमिका, विकासशील देशों की प्रतिनिधित्व की मांग, और वैश्विक शांति बनाए रखने की चुनौतियों के मद्देनजर विस्तार के औचित्य की जांच करता है। इस पेपर में यह भी चर्चा की गई है कि सुरक्षा परिषद के विस्तार से न केवल अधिक न्यायसंगत प्रतिनिधित्व सुनिश्चित होगा बल्कि परिषद की प्रभावशीलता और वैधता भी बढ़ेगी।

KEYWORDS:

सुरक्षा परिषद, विस्तार, वैश्विक शांति, शक्ति संरचना, उभरती शक्तियाँ, प्रतिनिधित्व, न्यायसंगतता, वैश्विक शासन।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
29th May 2024	31st May 2024

विषय वस्तु

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद को अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। इसे 1945 में स्थापित किया गया था और इसके पास दुनिया के किसी भी हिस्से में सैन्य हस्तक्षेप सहित बाध्यकारी निर्णय लेने की शक्ति है। वर्तमान में, UNSC में 15 सदस्य हैं, जिनमें से 5 स्थायी सदस्य (P5) हैं: संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, चीन, फ्रांस, और यूनाइटेड किंगडम। इन स्थायी सदस्यों के पास वीटो शक्ति है, जो उन्हें किसी भी प्रस्ताव को रोकने की अनुमति देती है, भले ही शेष सदस्यों ने उसे समर्थन दिया हो। हालाँकि, पिछले कुछ दशकों में अंतरराष्ट्रीय राजनीति और आर्थिक शक्ति में महत्वपूर्ण बदलाव आया है, जिससे UNSC की वर्तमान संरचना के औचित्य पर प्रश्न उठे हैं।

वैश्विक शक्ति संरचना में परिवर्तन

द्वितीय विश्व युद्ध के तुरंत बाद की दुनिया से आज की वैश्विक शक्ति संरचना काफी बदल गई है। वर्तमान में, वैश्विक राजनीति बहुध्रुवीय हो गई है, जिसमें चीन, भारत, ब्राजील, और दक्षिण अफ्रीका जैसी उभरती अर्थव्यवस्थाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। ये देश न केवल आर्थिक रूप से बल्कि राजनीतिक और सैन्य रूप से भी ताकतवर हो गए हैं। इनकी वैश्विक मुद्दों पर महत्वपूर्ण राय होती है और इन्हें अनदेखा नहीं किया जा सकता। सुरक्षा परिषद में इन देशों की अनुपस्थिति से न केवल वैश्विक शक्ति के संतुलन में असंतुलन पैदा होता है, बल्कि इससे परिषद की वैधता पर भी प्रश्नचिह्न लग जाता है।

उभरती शक्तियों की भूमिका

भारत, चीन, ब्राज़ील और दक्षिण अफ्रीका जैसे देश वैश्विक अर्थव्यवस्था के प्रमुख स्तंभ बन चुके हैं। उनकी आबादी, क्षेत्र, और आर्थिक विकास दर उन्हें वैश्विक मंच पर महत्वपूर्ण खिलाड़ी बनाती है। इन देशों की वैश्विक शांति, सुरक्षा, और विकास के मामलों में महत्वपूर्ण योगदान की अनदेखी करना अनुचित है। उदाहरण के लिए, भारत संयुक्त राष्ट्र शांति सैनिकों का सबसे बड़ा योगदानकर्ता है और वैश्विक सुरक्षा के लिए उसकी भूमिका निर्विवाद है। इसी प्रकार, चीन की बढ़ती सैन्य और आर्थिक शक्ति ने उसे एक प्रमुख वैश्विक शक्ति बना दिया है। सुरक्षा परिषद के विस्तार के बिना, इन देशों की आवाज़ को अनसुना किया जा रहा है, जो UNSC की वैधता को कमजोर करता है।

विकासशील देशों का प्रतिनिधित्व

वर्तमान सुरक्षा परिषद मुख्य रूप से द्वितीय विश्व युद्ध के विजयी देशों की संरचना को दर्शाती है। यह संरचना विकासशील देशों की वास्तविकता और आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व नहीं करती। अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका जैसे क्षेत्रों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं है, जबकि ये क्षेत्र वैश्विक जनसंख्या और विकास के महत्वपूर्ण भागीदार हैं। विशेष रूप से अफ्रीका, जो अक्सर सुरक्षा परिषद के एजेंडा का केंद्र होता है, के पास सुरक्षा परिषद में कोई स्थायी सदस्य नहीं है। यह प्रतिनिधित्व में असमानता को दर्शाता है और वैश्विक शासन प्रणाली की न्यायसंगतता पर सवाल उठाता है। सुरक्षा परिषद के विस्तार से विकासशील देशों की आवाज़ को सुनने का अवसर मिलेगा और परिषद की निर्णय-प्रक्रिया को अधिक समावेशी बनाया जा सकेगा।

वीटो शक्ति का मुद्दा

वीटो शक्ति UNSC के सबसे विवादास्पद पहलुओं में से एक है। P5 देशों के पास यह शक्ति है, जो उन्हें किसी भी प्रस्ताव को रोकने की अनुमति देती है, भले ही उसे अन्य सदस्यों का व्यापक समर्थन प्राप्त हो। यह प्रणाली निर्णय लेने की प्रक्रिया को बाधित कर सकती है और सुरक्षा परिषद की प्रभावशीलता को कमजोर कर सकती है। कई अवसरों पर, P5 सदस्य अपने राष्ट्रीय हितों के आधार पर वीटो का उपयोग करते हैं, न कि वैश्विक शांति और सुरक्षा के हित में। उदाहरण के लिए, सीरिया में संघर्ष के दौरान, विभिन्न P5 सदस्यों द्वारा वीटो का उपयोग करने के कारण कई प्रस्तावों को पारित होने से रोक दिया गया, जिससे वहां मानवीय संकट और बढ़ गया। सुरक्षा परिषद के विस्तार के साथ-साथ वीटो शक्ति के उपयोग पर पुनर्विचार भी आवश्यक है।

वैश्विक शांति बनाए रखने की चुनौतियाँ

21वीं सदी में वैश्विक शांति बनाए रखना पिछले कुछ दशकों की तुलना में कहीं अधिक जटिल हो गया है। आतंकवाद, साइबर हमले, जलवायु परिवर्तन, महामारी, और अन्य असमान खतरों ने वैश्विक सुरक्षा परिदृश्य को जटिल बना दिया है। इन खतरों का सामना करने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों और संस्कृतियों के दृष्टिकोण शामिल हों। सुरक्षा परिषद का विस्तार इसे अधिक प्रतिनिधि और प्रभावी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा। इसमें नई स्थायी और अस्थायी सीटों को जोड़कर, सुरक्षा परिषद को अधिक व्यापक और समावेशी बनाया जा सकेगा, जो वैश्विक मुद्दों पर बहस के लिए एक व्यापक मंच प्रदान करेगा।

सुरक्षा परिषद के विस्तार के लाभ

- **न्यायसंगतता और वैधता में वृद्धि:** सुरक्षा परिषद के विस्तार से वैश्विक शक्ति

के वितरण को अधिक न्यायसंगत तरीके से प्रतिबिंबित किया जा सकता है। इससे विकासशील देशों और उभरती शक्तियों को उचित प्रतिनिधित्व मिलेगा, जिससे परिषद की निर्णय लेने की प्रक्रिया अधिक न्यायसंगत और वैध होगी।

- **निर्णय-प्रक्रिया में सुधार:** अधिक सदस्य और दृष्टिकोण जोड़ने से परिषद की निर्णय-प्रक्रिया में सुधार होगा। इससे वैश्विक मुद्दों पर बहस और निर्णय लेने में व्यापकता और संतुलन आएगा।
- **वैश्विक शांति और सुरक्षा को बढ़ावा:** विस्तार से सुरक्षा परिषद को वैश्विक शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित किया जा सकेगा। यह विभिन्न प्रकार के खतरों का सामना करने के लिए अधिक संसाधनों और समर्थन के साथ काम कर सकेगा।
- **बहुपक्षवाद को समर्थन:** विस्तार बहुपक्षवाद के प्रति प्रतिबद्धता का संकेत देगा, जो वैश्विक शासन प्रणाली में सहयोग और संवाद को बढ़ावा देता है। यह अंतरराष्ट्रीय समुदाय के बीच विश्वास और सहयोग को प्रोत्साहित करेगा।

विस्तार के लिए संभावित चुनौतियाँ

- **P5 सदस्यों का प्रतिरोध:** P5 सदस्य, जो वर्तमान में वीटो शक्ति रखते हैं, विस्तार के लिए प्रतिरोध कर सकते हैं, क्योंकि इससे उनकी विशेष स्थिति कमजोर हो सकती है। उनके लिए अपनी शक्ति साझा करने के लिए सहमत होना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।
- **नए स्थायी सदस्यों का चयन:** यह निर्धारित करना कि किन देशों को नए स्थायी सदस्य के रूप में शामिल किया जाना चाहिए, एक जटिल प्रक्रिया है। विभिन्न देशों के दावों और क्षेत्रीय संतुलन को ध्यान में रखते हुए एक सहमति बनाना कठिन हो सकता है।
- **संरचनात्मक और प्रक्रियात्मक सुधार:** विस्तार के साथ-साथ UNSC की संरचना और प्रक्रियाओं में सुधार की आवश्यकता होगी। इससे परिषद की कार्यप्रणाली में बदलाव की आवश्यकता हो सकती है, जो एक लंबी और जटिल प्रक्रिया हो सकती है।

भारतीय दृष्टिकोण और योगदान

भारत लंबे समय से UNSC के विस्तार का समर्थन करता रहा है और स्थायी सदस्यता के लिए अपनी दावेदारी पेश करता है। भारत की बढ़ती आर्थिक, राजनीतिक, और सैन्य शक्ति, साथ ही वैश्विक शांति और सुरक्षा में इसके योगदान को देखते हुए, सुरक्षा परिषद में इसकी उपस्थिति को उचित ठहराता है। भारत ने आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, और विकासशील देशों के मुद्दों पर अपनी आवाज उठाई है और वैश्विक शासन में सक्रिय भूमिका निभाई है। UNSC में भारत की स्थायी सदस्यता न केवल इसके राष्ट्रीय हितों को बढ़ावा देगी बल्कि परिषद की समग्र प्रभावशीलता और वैधता को भी बढ़ाएगी।

निष्कर्ष

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का विस्तार वैश्विक शासन प्रणाली में एक महत्वपूर्ण सुधार है। आज की बहुध्रुवीय दुनिया में, UNSC की वर्तमान संरचना वैश्विक शक्ति के वास्तविक वितरण को प्रतिबिंबित नहीं करती है और इसमें व्यापक प्रतिनिधित्व की कमी है। भारत, ब्राजील, जर्मनी, जापान, और अफ्रीकी देशों जैसे उभरते और विकासशील देशों की भूमिका को पहचानना और उन्हें निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल करना समय की मांग है।

सुरक्षा परिषद के विस्तार से न केवल परिषद की वैधता और न्यायसंगतता में वृद्धि होगी, बल्कि यह वैश्विक शांति और सुरक्षा बनाए रखने के उसके प्रयासों को भी मजबूत करेगा। यह अधिक समावेशी और प्रतिनिधि संरचना अंतरराष्ट्रीय विवादों के समाधान में प्रभावी होगी और वैश्विक समुदाय के बीच विश्वास और सहयोग को प्रोत्साहित करेगी। हालाँकि, विस्तार प्रक्रिया को वास्तविक बनाने के लिए P5 देशों का सहयोग और अंतरराष्ट्रीय समुदाय की सहमति आवश्यक है। UNSC के विस्तार के माध्यम से बहुपक्षवाद को बढ़ावा देना और वैश्विक शासन को अधिक न्यायपूर्ण और समावेशी बनाना 21वीं सदी की चुनौतियों से निपटने के लिए आवश्यक है।

REFERENCES

1. **गुप्ता, अजय कुमार।** *संयुक्त राष्ट्र और वैश्विक शासन: सुरक्षा परिषद का पुनर्गठन।*
2. **शर्मा, आर. के.** *अंतरराष्ट्रीय संबंध और संयुक्त राष्ट्र।*
3. **मेहता, निशा।** *वैश्विक राजनीति और सुरक्षा परिषद का विस्तार।*
4. **कुमार, सुरेश।** *संयुक्त राष्ट्र: सिद्धांत और व्यवहार*
5. **मिश्रा, संतोष।** *यूनाइटेड नेशंस इन द ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी: चैलेंजेज एंड प्रॉस्पेक्ट्स*
6. **वर्मा, सुधीर।** *वैश्विक सुरक्षा संरचना और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद।*
7. **जोशी, आर. सी.** *आधुनिक अंतरराष्ट्रीय संगठन।*